नं. १९६ त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	ज.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ त्री. प.	५	७	४	१ ति.	१ त्री. जा.	१ त्रस.	२ व. १ अनु. औ. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ असं.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ अच.	१ आहा.	२ साका. अना.

१९६ तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं,

----

अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये सात प्राण; अपर्याप्तकालमें उक्त सात प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना शेष पांच प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक त्रीन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, पंच पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण, काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो,सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१९७।

नं. १९७ त्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ त्री. अ.	५ अ.	५	४	१ ति.	१ त्री. जा.	१ त्रस.	२ औ. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अ	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

														शु .					

एवं तीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। लध्दि-अपज्जत्ताणं पि अपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं एगो आलावो वत्तव्वो।

चउरिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ

योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक त्रीन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, आदिकी तीन इन्द्रियां, कायबल और आयु ये पांच प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले त्रीन्द्रिय निवृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए।

चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरि-

----

पंच अपज्जत्तीओ, अट्ठपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१९८।

नं. १९८ चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ च.प. च.अ.	५ प.५ अ.	८ प.६ अ.	४	१ ति.	१ च. जा.	१ त्रस.	४ व.१ अनु. औ.२ का.१	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.३ अशु.	२ भ.अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, अट्ठपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया,

----

न्द्रिय-पर्याप्त और चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, कायबल,

वचनबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये आठ प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त आठ प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना शेष छह प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाय-योग ये चार योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त आठ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१९९।

नं. १९९ चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी .	प .	प्रा .	सं .	ग.	इं.	क ा.	यो.	व `.	क .	ज्ञ ा .	सं य.	द.	ले .	भ.	स .	सं ज्ञि ा	अ ा.	उ .
१ मि .	१ च. प.	५	८	४	१ ति .	१ च . ज ा.	१ त्र स .	२ व. १ अ नु.	१ न ाप ुं .	४	२ कु म. कु श्रु	१ अ सं .	२ च क्षु . अ	द्र. ६ भा . ३	२ भ. अ .	१ मि .	१ अ सं .	१ अ ाह ार	२ स ाक ा र

								औ. १			.		च.	अशु.					अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, छ पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२००।

नं. २०० चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ च. अ.	५ अ.	६	४	१ ति.	१ च. जा.	१ त्रस.	२ औ. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अ चा.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अ	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

														शु .					

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय - अपर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच अपर्याप्तियां, आदिकी चार इन्द्रियां, कायबल और आयु ये छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

एवं चउरिंदियाणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। चउरिंदियाणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं एओ आलावो वत्तव्वो।

नं. २०१ पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग ा.	इं.	का.	यो.	व `.	क .	इ ा .	संय.	द.	ले.	भ ा.	स.	सं ज्ञि ा	अा.	उ.
१४	४ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ. ५ प. ५	१०, ७ ९, ७, ४, २,	४ क्षीण सं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१५ अयोग.	३ अप ग ा.	४ अक ष ा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले	२ भ ा. अ.	६	२ सं. अ सं. अ	२ अ ाह ा. अ ना.	२ स ाक ा. अ ना.

	असं. प. असं. अ.	अ.	१											श्रा.			नु.		यु. उ.

२०१पंचिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण,चत्तारिपाण-दोपाण-एयपाणा, चत्तारि सण्णाओ, खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठणाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वे-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, असण्णिणो, णेव सण्णिणो

इसी प्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले (निवृत्ति) पर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले लब्ध्यपर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए।

पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञी-पर्याप्त जीवोंके छहों पर्याप्तियां, संज्ञी-अपर्याप्त जीवोंके छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मनःपर्याप्तिकेविना पांच पर्याप्तियां, असंज्ञी-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके पांच अपर्याप्तियां; संज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके दशों प्राण, संज्ञी-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालभावी सात प्राण, असंज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मनोबलके विना नौ प्राण, असंज्ञी-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय

जीवोंके अपर्याप्तकालभावी सात प्राण, सयोगिकेवली जिनके वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, केवलिसमुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें आयु और कायबल ये दो प्राण और अयोगिकेवली भगवान् के एक आयु प्राण होता है। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पंद्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी

णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-चत्तारिपाण-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमो, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा२०२।

नं. २०२ पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	गा.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	इाा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि ा	आ.	उ.
१४	२ सं. प.	६ ५	१० ९	४ क्षीण	४	१ पंच	१ त्रस	११ म.	३ अ	४ अक	८	७	४	द्र. ६ भा.	२ भ. अ	६	२ सं.	२ आह	२ साक

	अ. प.		४ स . १ अ .	सं .		ो .	.	४ व. ४ अ ौ. १ वै. १ अ ा. १ अ यो .	प ग ा.	ष ा.				६ अ ले.	.		अ सं . अ नु .	ा. अ ना .	ा. अ ना . यु . उ .

इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोंगोसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक,

अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा१ (मु. सण्णा वा) वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, छ णाणाणि, चत्तारि संजमो, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा२०३।

नं. २०३ पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	गा.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि ा	आ.	उ.
५ मि. सा. अ. प्र. स.	२ सं. अं. असं. अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४ क्षीण सं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ औ.मि. वै.मि. आ.	३ अपग.	४ अकषा.	६ विभं. मन. विना.	४ असं. सामा. छेदो.	४	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ मि. सा. औप. क्षा.	२ सं. असं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. यु. उ.

								मि. कार्म.				यथा.				क्षायो.			.

पंचिंदिय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा,

----

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, तथा सयोगकेवलि-समुद्घातके अपर्याप्तकालमें दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। विभंगावधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं; भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है। आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, पूर्वोक्त चार जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके

छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२०४।

नं. २०४ पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	गा.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भा.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	४ सं.प. सं.अ. असं.प. असं.अ.	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१० ७ ९ ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भा. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णव पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया,

----

पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक,

----

मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२०५।

नं. २०५ पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी .	प .	प्रा .	सं .	ग ा.	इं.	क ा.	यो .	व `.	क .	इ ा .	सं य.	द .	ले .	भ ा.	स .	सं ज्ञि ा	अ ा.	उ .
१ मि .	२ सं . प. अ	६ ५	१ ० ९	४	४	१ पंचे .	१ त्र स .	१ ० म. ४ व.	३	४	३ अ इ ा .	१ अ सं .	२ च ा क्ष ु	द्र. ६ भा . ६	२ भ ा. अ .	१ मि .	२ सं . अ सं	१ अ ाह ार	२ स ा क ार

	सं.प.							४ औ.१ वै.१					. अचा.				.		अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सणाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२०६।

नं. २०६ पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.अ. असं.अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुमा. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.२ का.शु. भा.६	२ भा.अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाक

																			ार

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिाक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो। एवं सण्णिपंचिंदियाणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति जाणिऊण सकलालावा वत्तव्वा।

असण्णि-पंचिंदियाणं१ (मु. पंचिदियाणं भण्णमाणे।) पज्जत्तणामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२०७।

नं. २०७ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१	२	५	९	४	१	१	१	४	३	४	२	१	२	द्र.	२	१	२	२	२

मि.	असं. प असं. अ.	प. ५ अ.	७		ति.	पंचे.	त्रस.	व. १ अनु. औ. २ का. १			कुमा. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अचक्षु.	६ भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं.	आहार अनाहार	साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, णव पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

----

सामान्य पंचेन्द्रिय जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापके समान जानने चाहिये। इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके समस्त आलाप जानकर कहना चाहिए।

पर्याप्त नामकर्मके उदयसहित असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदरिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; तीनों वेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति,

----

दो जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२०८।

नं. २०८ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ असं. प.	५	९	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ व. १ अनु. औ. १	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण

काउसुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२०९।

नं. २०९ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ असं. अ.	५ अप.	७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुमा. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं,

तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संपधि पंचिंदियलध्दिअपज्जत्ताणं१ (मु. अपज्जत्ताणं अपज्जत-।) पंचिदियलध्दिअपज्जत्त२ (मु. अपज्जत्ताणमपज्जत्त-।) णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, तिरिक्खगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काऊ - सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२१०।

नं. २१० पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु	जी .	प .	प्रा .	सं .	ग.	इं.	क ा.	यो .	वे.	क .	ज्ञा.	सं य.	द.	ले .	भ ा.	स .	सं ज्ञि ा	अ ा.	उ .
१ मि .	२ सं. अ. अ सं. अ.	६ अ . ५ अ .	७ ७	४	२ म. ति .	१ पंचे .	१ त्र स .	२ अ ौ. मि . क ार्म	१ नपुं .	४	२ कुम् ा. कुश्र ु	१ अ सं .	२ च क्षु . अ च .	द्र. २ क ा. शु . भा	२ भ ा. अ .	१ मि .	२ सं . अ सं .	२ अ ाह ार अ ना हा	२ स ाक ा र अ ना

								.						. ३ अ शु .				र	क ार

सण्णिपंचिदिय-लध्दिअपज्जत्ताणं सण्णिपंचिंदियलध्दिअपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ,

----

अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति और तिर्यंचगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति और तिर्यंचगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और

भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२११।

नं. २११ संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	२ मति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

असण्णिपंचिंदिय-लध्दिअपज्जत्ताणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिछ्त्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२१२।